Dated 19/9/2020 Saturday

B.A Part-1 (H) Philosophy

डॉ० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

Date / /
Page

न्याय दर्शन में हेत्वाभास की व्याख्या करें ?

Ans: → न्याय दर्शन में अनुमान के वास्तविक दोष को ही हेत्वाभास कहते हैं। हेत्वाभास का शाब्दिक अर्थ है हेतु का आभास होना अर्थात जो वास्तविक हेतु नहीं है उसका वास्तविक हेतु के समान प्रतीत होना। वास्तविक हेतु का लक्षण है साधकता। जिसमें साध्य को सिद्ध करने का सामर्थ्य है वही वास्तविक हेतु है। जिसमें साध्य को सिद्ध करने का सामर्थ्य न हो उसे वास्तविक हेतु नहीं मानकर हेत्वाभास समझना चाहिए। साध्य की सिद्धि नहीं होने का कारण गलत हेतु या हेत्वाभास ही है। अनुमान में होने वाले दोष का एकमात्र कारण गलत हेतु या हेत्वाभास है।

हेत्वाभास के पाँच भेद हैं:— सव्यभिचार - अनुमान को सही होने के लिए हेतु का साध्य के साथ अव्यभिचारी संबंध का होना आवश्यक है। हेतु का साध्य के अतिरिक्त किसी अन्य से संबंध नहीं होना चाहिए हेतु का एकमात्र संबंध साध्य से होना चाहिए। परन्तु यदि हेतु ऐसा है कि वह कभी साध्य के साथ एवं कभी किसी अन्य वस्तु के साथ संबंधित हो तो उसे सव्यभिचारी हेतु कहा जाता है तथा इसके परिणामस्वरूप अनुमान में उत्पन्न होने वाले दोष को सव्यभिचार दोष कहा जाता है। चूंकि यहाँ हेतु एकमात्र साध्य से संबंधित नहीं रहकर अन्य से भी संबंधित होता है, इस कारण इसे अनैकान्तिक दोष भी कहते हैं। जैसे: सभी ज्ञात पदार्थ अग्नियुक्त हैं, पर्वत ज्ञात पदार्थ है। अतः पर्वत अग्नियुक्त है। यहाँ साहचर्य केवल साध्य के साथ ही नहीं बल्कि अन्य वस्तुओं के साथ भी पाया जाता है।

विरुद्ध :→ यह हेत्वाभास है जो साध्य में रहकर उसके विपरीत वस्तु में व्याप्त रहता है अर्थात जिसका साध्य के साथ व्याप्ति संबंध नहीं होता, अपितु उसमें विपरीत के साथ व्याप्ति संबंध रहता है। जैसे 'शब्द नित्य है क्योंकि वह कार्य है'। तो यहाँ 'कार्यत्व होता है, वहाँ नित्यत्व कभी नहीं होता। अतः साध्य नित्यत्व के विपरीत अर्थात अनित्यत्व के साथ व्याप्ति नियम रखने वाला कार्यत्व हेतु नित्यत्व की सिद्धि के लिए 'विरुद्ध' हेत्वाभास है।

असिद्ध : हेत्वाभास वहाँ होता है, जहाँ हेतु की पक्ष में विद्यमानता निश्चित नहीं रहती। यह असिद्ध तीन प्रकार का कहा गया है: (i) आश्रयासिद्ध (ii) स्वरूपासिद्ध (iii) व्याप्यत्वासिद्ध